रडार अनुबंध

चर्चा में क्यों?

रक्षा मंत्रालय ने [भारतीय वायुसेना](#) के लिये **परिवहन योग्य रडार 'अश्वनी'** की खरीद हेतु उत्तर प्रदेश के गाज़ियाबाद में स्थित **भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड (BEL)** के साथ **2,906 करोड़ रुपए** के अनुबंध पर हस्ताक्षर किये।

मुख्य बिंदु

- **अश्वनी रडार के बारे में:**
  - **लो-लेवल ट्रांसपोर्टेबल रडार-LLTR' (अश्वनी)** एक **सक्रिय इलेक्ट्रॉनिक रूप से स्कैन किया गया चरणबद्ध ऐरे रडार** है।
  - इसका उपयोग **उच्च गति वाले लड़ाकू विमानों, मानव रहित हवाई वाहनों (UAV) और हेलीकॉप्टरों** जैसे धीमी गति वाले लक्ष्यों की निगरानी के लिये किया जाता है।
  - यह रडार **अत्याधुनिक ठोस अवस्था प्रौद्योगिकी** पर आधारित है।
  - इसे **इलेक्ट्रॉनिक्स एवं रडार विकास प्रतिष्ठान (LRDE) और रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (DRDO)** द्वारा स्वदेशी रूप से डिज़ाइन व विकसित किया गया है।
- **भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड (BEL)**
  - यह भारत सरकार के रक्षा मंत्रालय के अधीन कार्यरत एक **नवरत्न सार्वजनिक क्षेत्र उपक्रम (PSU)** है।
  - इसकी स्थापना वर्ष **1954** में राष्ट्र की रक्षा आवश्यकताओं को पूरा करने हेतु की गई थी।
  - यह संगठन **रक्षा इलेक्ट्रॉनिक्स** और **पेशेवर इलेक्ट्रॉनिक्स** के विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत है, जिससे भारतीय रक्षा बलों को आधुनिक तकनीकी सहायता प्राप्त होती है।
  - **उत्पादन इकाइयाँ**
    - BE की अनेक उत्पादन इकाइयाँ हैं, जिनमें **बंगलूरू** (मुख्य कार्यालय), **गाज़ियाबाद (उत्तर प्रदेश)**, **पंचकुला (हरियाणा)**, **कोटद्वार (उत्तराखंड)**, **हैदराबाद** और **मछलीपत्तनम (आंध्र प्रदेश)**, **नवी मुंबई** तथा **पुणे (महाराष्ट्र)**, एवं **चेन्नई (तमिलनाडु)** शामिल हैं।

रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (DRDO)

- **परिचय:**
  - DRDO **रक्षा मंत्रालय** की **अनुसंधान एवं विकास शाखा है** जिसका उद्देश्य भारत को अत्याधुनिक रक्षा प्रौद्योगिकियों में सशक्त बनाना है।
  - **आत्मनिर्भरता की दिशा में प्रयास** तथा **अग्नि और पृथ्वी मिसाइल शृंखला, हल्के लड़ाकू विमान तेजस, मल्टी बैरल रॉकेट लांचर, पिनाका, वायु रक्षा प्रणाली आकाश, रडारों की एक विस्तृत शृंखला और इलेक्ट्रॉनिक युद्ध प्रणाली आदि** जैसी सामरिक प्रणालियों एवं प्लेटफॉर्मों के सफल स्वदेशी विकास एवं उत्पादन से भारत की सैन्य शक्ति में वृद्धि हुई है।
- **गठन:**
  - इसका गठन वर्ष 1958 में भारतीय सेना के **तकनीकी विकास प्रतिष्ठान (TDEs) और तकनीकी विकास एवं उत्पादन निदेशालय (DTDP)** तथा **रक्षा विज्ञान संगठन (DSO)** के एकीकरण से हुआ था।
  - DRDO, 50 से अधिक प्रयोगशालाओं का एक नेटवर्क है जो विभिन्न विषयों जैसे **वैमानिकी, आयुध, इलेक्ट्रॉनिक्स, लड़ाकू वाहन, इंजीनियरिंग प्रणाली** आदि को कवर करते हुए **रक्षा प्रौद्योगिकियों** के विकास में गहनता के साथ संलग्न है।

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/radar-contract